Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 02, Issue: 01, March, 2026
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

अल्पचर्चित स्त्रियों की गौरवगाथा थेरीगाथा के विशेष सन्दर्भ में

डा0 रेखा राजपूत
प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
कन्या गुरुकुल परिसर, देहरादून
Email: rathorerekha483@gmail.com

सारांश

गौतम बुद्ध द्वारा प्रतिपादित बौद्ध धर्म ने प्राचीन भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला। यद्यपि प्रारम्भ में संघ में स्त्रियों के प्रवेश को लेकर संकोच था, किन्तु महाप्रजापति गौतमी और आनन्द के प्रयासों से भिक्षुणी संघ की स्थापना संभव हुई। अष्टगुरुधर्म जैसे नियमों के माध्यम से स्त्रियों के लिए कुछ सीमाएँ निर्धारित की गईं, जो आंशिक रूप से भेदभावपूर्ण थीं, फिर भी उन्होंने स्त्रियों को आध्यात्मिक उन्नति और शिक्षा का नया मार्ग प्रदान किया।

थेरीगाथा के अध्ययन से ज्ञात होता है कि विभिन्न सामाजिक, आर्थिक एवं वर्णीय पृष्ठभूमियों की स्त्रियों ने बौद्ध संघ में प्रवेश कर विद्वत्ता और आध्यात्मिक उपलब्धियाँ प्राप्त कीं। भिक्षुणियों जैसे पटाचारा, धम्मदिन्ना और खेमा ने दार्शनिक एवं धार्मिक विमर्श में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इस प्रकार बौद्ध धर्म ने स्त्रियों को सामाजिक बंधनों से आंशिक मुक्ति दिलाते हुए उन्हें शिक्षा, आत्मनिर्भरता एवं आध्यात्मिक साधना का अवसर प्रदान किया। हालांकि पितृसत्तात्मक संरचनाएँ पूर्णतः समाप्त नहीं हुईं, फिर भी बौद्ध परम्परा ने स्त्रियों की स्थिति में उल्लेखनीय सुधार का मार्ग प्रशस्त किया।

Keywords::- बौद्ध धर्म, स्त्री स्थिति, भिक्षुणी संघ, थेरीगाथा, अष्टगुरुधर्म, सामाजिक परिवर्तन

प्रस्तावना

बौद्ध धर्म का प्रभाव समाज के विभिन्न घटकों पर सुविदित है। स्त्रियाँ भी इससे अछूती नही रही। बौद्ध धर्म यद्यपि प्रारम्भ से ही सैद्धान्तिक रूप से समतावादी रहा है[1]। अतिसंवेदनशील बुद्ध मानव जीवन की व्याधियों से अत्यन्त व्यथित थे। गौतम बुद्ध की करूणा एवं उदारता ने समान भाव से समाज के सभी वर्गों को लाभान्वित किया। परिस्थितिजन्य, एकाकीपन एवं दुखों से निवृत्ति, श्रेष्ठ जीवन अनन्तः निर्वाण की प्राप्ति की आशा ने पवित्र, अपवित्र, विवाहित-अविवाहित सभी वर्गों की स्त्रियों को बौद्ध धर्म अपनाने के लिए प्रेरित किया[2]। इसी तरह विभिन्न आर्थिक वर्ग से भी स्त्रियों ने संघ में शरण ली। सबसे ज्यादा राजपरिवारों से आने वाली स्त्रियाँ थी, दूसरे क्रम पर विभिन्न.विभिन्न आर्थिक स्तर की स्त्रियों को बौद्ध धर्म में उचित स्थान दिये गये।

गौतम बुद्ध तथा उनके प्रिय शिष्य आनन्द का नारियों के प्रति अत्यन्त सकारात्मक दृष्टिकोण था। यद्यपि प्रारम्भ में बुद्ध ने संघ में स्त्रियों को प्रवेश की अनुमति प्रदान नही दी थी क्योंकि उनका विचार था कि संघ में स्त्रियों को प्रवेश देने से संघ भोग.विलास के केन्द्र बन जायेगें उन्होंने आनन्द से कहा था कि आनन्द.यदि तथागत प्रवेशित धर्म विनय में स्त्रियाँ प्रवज्या न पाती तो ब्रह्मचर्य चिर स्थायी होता, सदधर्म एक हजार वर्ष ठहरता। परन्तु चूँकि आनन्द! स्त्रियों ने

Author:- Rekha Rajput
Email:- rathorerekha483@gmail.com
Received:- 04 January , 2026
Accepted:- 12 March, 2026.
Available online:- 30 March, 2026
Published by JSSCES, Bareilly
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Non Commercial 4.0 International License

Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 02, Issue: 01, March, 2026
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

प्रवज्या ग्रहण की, इसलिये अब यह ब्रह्मचर्य चिर स्थायी न रहेगा और यह सदधर्म पाँच सौ वर्षों ही ठहरेगा[3]। लेकिन जब उनके शिष्य आनन्द एवं उनकी विमाता प्रजापति गौतमी ने बुद्ध से प्रार्थना करते हुए कहा कि महिलायें भी आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने के योग्य हैं अतः उन्हे भी संघ में प्रवेश दिया जाये, इससे उन्हे वंचित न किया जाये तब बुद्ध ने संघ में नारियों के प्रवेश की अनुमति आठ नियमों के साथ प्रदान की।

इन नियमों के अनुसार एक चिरदीक्षित भिक्षुणी जो 100 वर्षो से संघ में प्रवजित होद्ध को भी सहःदीक्षित भिक्षु से अभिवादन करना आवश्यक था, साथ ही इस धर्म का सत्कार, गौरव, मान एवं पूजन करते रहना आवश्यक था। इसका जीवनपर्यनत कभी उल्ल्ंघन न हो,[4] भिक्षुणी को प्रव्रजित होने के लिए भिक्षु संघ एवं भिक्षुणी संघ दोनों सें अनुमति प्राप्त करनी होती थी जबकि भिक्षु-भिक्षुणियों की अनुमति के बिना ही संघ में प्रवेश कर लेते थे[5]। किसी भी भिक्षुणी को ऐसे स्थान में वर्षा.वास करनें की अनुमति नही थी जहाँ कोई भिक्षु निवास करता हो[6] वर्षावास समाप्त होने पर भिक्षुणी को अपने पाप यदि कोई हो तोद्ध भिक्षु एवं भिक्षुणी दोनों संघों के समक्ष स्वीकार करने पड़ते थे,[7] किसी अपराध की दोषी होने पर भिक्षुणी को दोनों संघो से क्षमा याचना करनी होती थी,[8] भिक्षुणी भिक्षु संघ को धार्मिक प्रवचन नही दे सकती थी जबकि चयनित भिक्षु प्रवचन देने के अधिकारी थे,[9] दो वर्षों तथा छह धर्मों में शिक्षा प्राप्त एवं शिक्षमाणा भिक्षुणी को दोनों संघों में उपसम्पदा करनी चाहिए एवं दो वर्षों तक छह धर्मों में शिक्षाप्राप्त एवं शिक्षमाणा भिक्षुणी को दोनों संघों में पक्षमानता करनी चाहिए[10], कैसा ही कारण उपस्थित होने पर भी भिक्षुणी को किसी भिक्षु के प्रति आक्रोश या अपमान के शब्द प्रयुक्त नही करने चाहिए। आज से भिक्षुओं के प्रति भिक्षुणियों का कुछ कहना निषिद्ध किया जाता है। हाँ भिक्षुणियों द्वारा प्रमाद होने पर, भिक्षु उनको कुछ कह सकतें हैं,[11] इस धर्म का भी भिक्षुणियों को सत्कार, गौरव, मान एवं पूजन के साथ पालन करना होगा। ऐसा प्रतीत होता है कि बुद्ध संघ में स्त्रियों के प्रवेश से होने वाली कठिनाइयों के प्रति चिन्तित थे। इसीलिए उन्होने भिक्षुणियों के लिए अष्टगुरुधर्म की मर्यादा बतायी थी। यह यावज्जीवन पालनीय धर्म था, जिसका अतिक्रमण नही किया जा सकता था। परन्तु इन आठ नियमों के साथ संघ में प्रवेश की धारणा बुद्ध की थी अथवा परवर्ती भिक्षुओं की यह कहना बहुत मुश्किल है।

यद्यपि यह नियम निश्चित ही भेदभाव पूर्ण थे परन्तु फिर भी स्त्रियों को संघ में प्रवेश की अनुमति प्राप्त होना ही महत्वपूर्ण था, जिसनें उन्हे एक सम्मानजनक मार्ग दिखाया[12]। जिस पर चलकर स्त्रियाँ अपनी एवं अन्य लोगों की अध्यात्मिक उन्नति का प्रयत्न कर सकती थी। बुद्ध द्वारा स्त्रियों को सं्घ में प्रवेश की अनुमति दिये जाने के कारण उन्हे शिक्षा प्राप्त करने का सुअवसर मिला जिससे बहुत सी नारियाँ ब्रह्मचर्य का पालन करती हुई धार्मिक तथा दार्शनिक विषयों में ज्ञान प्राप्त करने लगी। थेरीगाथा में पचास ऐसी थेरियों के ;स्थिविर.स्त्रियोंद्ध के उल्लेख मिलतें हैं जो आजीवन ब्रह्मचारिणी रही थी और इनमें से अठारह स्त्रियों नें वैवाहिक जीवन के पश्चात भिक्षु व्रत ग्रहण किया था और अपनी विद्वता से संघ को गौरवान्वित किया इनमें शुभा, सुमेधा और अनुपमा के नाम उल्लेखनीय है। ये स्त्रियाँ अपने उच्च ज्ञान के कारण "थेरी" का पद प्राप्त करने में समर्थ हुई थी। इन्ही बौद्ध भिक्षुणियों द्वारा संघ प्रवास के समय लिखी गई कविताओं का संकलन थेरीगाथा के जो सुत्तपिटक के खुद्दक निकाय के नवें खण्ड के रूप में संकलित है। वास्तव में थेरीगाथा स्त्रियों के अनुभव संसार का अदभुत संकलन है जिनमें उनके सुख.दुख, आशा.आकांक्षा, इच्छा.अनिच्छा और संवेदनाओं का परिचय मिलता है। थेरीगाथा में कविताओं और भजन के रूप में स्त्री जीवन के सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक अनुभव के साथ स्त्रियों की इच्छाशक्ति का परिचय मिलता है। थेरीगाथा से, जिसमें भिक्षुणियों द्वारा अपनी निम्न प्रकृति ;मारद्ध के उपर विजय प्राप्ति के समय के उद्गार वर्णित हैं, उनकी विद्वता के सम्बन्ध में अनेक महत्वपूर्ण सूचनाएं प्राप्त होती है। जैसा कि बुद्ध ने मार से कहा था कि जब तक भिक्षु.भिक्षुणियांॅ विनयवान, विशारद, बहुश्रुत तथा धर्मानुसार आचरण करने वाले नही हो जाते तब तक वे

Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 02, Issue: 01, March, 2026
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

परिनिर्वाण को प्राप्त नही होंगे। इसके प्रत्युत्तर में मार ने कहा था कि बुद्ध की भिक्षु.भिक्षुणियां उनकी इच्छा के अनुकूल विनीत एवं विशारद हो गये है।[13] मज्झिम निकाय के अनुसार वत्सगोत्र ने बुद्ध से पूछा कि कितनी भिक्षुणियां हैं, जो आश्रवों ;चित्तमलोंद्ध के क्षय से आश्रव रहित चित्त.विमुक्ति ;मुक्तिद्ध, प्रज्ञा विमुक्ति की इसी जन्म में स्वयं जानकर, साक्षात्कार कर विचरती है, बुद्ध ने उत्तर दिया कि ऐसी अनेक भिक्षु.भिक्षुणियाँ हैं, जो चित्त.विमुक्ति, प्रज्ञा विमुक्ति को इसी जन्म में स्वयं जानकर, साक्षात्कार कर, प्राप्त कर विचरती हैं।[14]

थेरीगाथा में 16 निपातों में विभक्त 522 गाथाएं हैं। इनमें 73 थेरियों ;स्थविरियोंद्ध के उद्गार है। थेरीगाथा में अनेक ऐसी भिक्षुणियों का उल्लेख है जिन्हे तीनों विद्याओं में पारंगत बताया गया है। गौतमी महाप्रजापति अपनी आदर्श छवि के साथ संघ में अपने पति की मृत्यु के बाद प्रवेश करती है जो अपनी योग्यता के बल पर सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान की अधिकारी बनी और साथ ही अन्य थेरियों के सामाजिक.मानसिक उत्थान में भी महत्वपूर्ण योगदान किया और अनेक स्त्रियों को बौद्ध धर्मानुयायी बनाया। फाहियान तथा हवेनसांग चीनी यात्रियों ने वैशाली में निर्मित एक स्तूप का उल्लेख किया है जिससे यह ज्ञात होता है कि बुद्ध की मौसी महाप्रजापति गौतमी तथा अन्य भिक्षुणियों ने निर्वाण पद को प्राप्त किया था।[15] इसी तरह विनयपिटक की ज्ञाता पटाचारा[16] का नाम आदर के साथ लिया जाता है। भिक्षुणी पटाचारा के उपदेश को अमोघ बताया गया है एवं विनय धारियों में अग्र कहा गया है। पटाचारा ने अपने उपदेश से दुखी नारियों को बौद्ध संघ में प्रवेश के लिए प्रोत्साहित किया। भिक्षुणी खेमा ने विजया को धातु, आयतन, आर्यसत्य, इन्द्रिय बल, एवं आर्य मार्ग का उपदेश दिया था[17]। इसी प्रकार भिक्षुणी बड्ढेसी ध्यान के बाद की अवस्था का वर्णन करते हुए कहती है कि अपने अतीत जन्म मुझे ज्ञात है, तथा विशोधित हुए मेरे चक्षु दिव्य हैं। परचित्तज्ञान मुझे लब्ध है, अलक्ष्य वस्तुओं को भी मैं श्रवण कर सकती हूं। योग विभूतियां भी मैने प्राप्त की हैं एवं छः अभिज्ञाओं का मैने साक्षात्कार किया है। बड्ढेसी भिक्षुणी ने स्कन्ध, आयतन और धातुओं का उपदेश दिया था।[18]

भिक्षुणी क्षेमा का कोशल नरेश प्रसेनजित से दार्शनिक वार्तालाप हुआ था। उसने प्रसेनजित के गूढ़ दार्शनिक प्रश्नों का बहुत ही विद्वतापूर्ण उत्तर दिया था। बौद्ध ग्रन्थों में क्षेमा को पण्डित तथा बहुश्रुता कहा गया था[19]। इसी प्रकार भिक्षुणी धम्मदिन्ना धम्म में पारंगत थी जिसने श्रावक विशाख के गम्भीर प्रश्नों का सहजतापूर्वक उत्तर दिया था। धम्मदिन्ना के उत्तरों का समर्थन स्वयं बुद्ध ने भी किया था तथा उसे पण्डिता तथा महाप्रज्ञावान बताया था[20]। भिक्षुणी भद्राकापिलायिनी को आचार्य स्थिविर महाकाश्यप के समान तीनों विद्याओं को जानने वाला बताया गया है। साथ ही उसे मृत्यु पर विजय प्राप्त करने वाली तथा मार और उसकी सेना को जीत कर अन्तिम देह धारण करने वाली कहा गया है[21]। इसी प्रकार जिनदत्ता नामक भिक्षुणी को विनयपिटक की पंडिता, बहुश्रुता तथा सदाचारिणी कहा गया है[22]। सुमेधा को शीलवती, बहुश्रुता एवं बुद्ध शासन के अनुसार शिक्षा पाई हुई बताया गया है[23]। अभिलेखीय साक्ष्यों में भी भिक्षुणियों की विद्वता की सूचना प्राप्त होती है। मथुरा से प्राप्त एक अभिलेख में भिक्षुणी बुद्धमित्रा को त्रिपिटिका कहा गया है[24]। सारनाथ से प्राप्त एक अन्य अभिलेख में भी सम्भवतः उसी भिक्षुणी को त्रेपिटिका कहा गया है.अर्थात वह तीनों पिटकों की ज्ञाता थी। उसे अपने गुरू थेर भदन्त बल के समान योग्य बताया गया है।[25] इसी प्रकार साची से प्राप्त एक अभिलेख में अविष्णा नामक भिक्षुणी को सूतातिकिनी कहा गया है.अर्थात वह सूत्रों की ज्ञाता थी या सुत्तपिटक में पारंगत थी।[26] अमरावती बौद्ध प्रतिमा अभिलेख तथा कन्हेरी बौद्ध गुहा लेख में भिक्षुणियों के लिए थेरी तथा भदन्ती शब्द का प्रयोग हुआ है।[27] थेरीगाथा में ऐसी अनेक भिक्षुणियों को तीनों विद्याओं में पारंगत बताया गया है, इसी प्रकार बौद्ध ग्रन्थों में अन्य विदुषी नारियों के नाम मिलते हैं जो विनयपिटक में पारंगत थी एवं उसका अध्यापन भी बड़ी योग्यता के साथ कर सकती थी।[28] भिक्षुणी शुक्का ने एक कुशल उपदेशक के रूप में अपनी पहचान बनाई।

Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 02, Issue: 01, March, 2026
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

थेरीगाथा के नाम से जाने जाने वाले संग्रह में शामिल तिहत्तर श्लोंकों या भजनों में से इकहत्तर श्लोक व्यक्तिगत भिक्षादात्री महिलाओं द्वारा उच्चारित किये गये माने जाते है, और अनेक श्लोक पटाचारा एवं उनके अनुयायियों के दो समूहों को समर्पित हैं, ये सभी गौतम के समकालीन थे। चाहे ये छंद किसी सहज उत्पत्ति से उत्पन्न हुए हों, या प्रत्येक महिला की कृतज्ञता और तीव्र आनन्द से अनायास ही फूट पड़े होए जब उसे यह गौरवशाली सत्य प्रकट हुआ कि उसका मन मुक्त हो गया है चित्तम विमुच्चि मेंद्ध या चाहे संपादक द्वारा पारम्परिक छन्दों को मिलाकर इन्हे संकलित किया गया हो, ये श्लोक एक निश्चित उद्देश्य का जीवन्त प्रमाण प्रस्तुत करते हैं, आध्यात्मिक प्रयासों के परिणामों को समाहित करने वाले ये श्लोक धार्मिक अनुभवों की विविधता में एक अमूल्य योगदान है। ज्ञात होता है कि छन्दों का सम्पूर्ण संग्रह महिलाओं को इस सम्प्रदाय में प्रवेश की अनुमति देने का एक अकाट्य औचित्य प्रस्तुत करता है। स्त्रियों ने अपनी निष्ठा, उदारता, उपदेशक के रुप में योगदान और अरहन्त जीवन से आन्दोलन को बहुत मजबूत और सुदृढ किया। उन्होने संघ में प्रवेश करने का निश्चय किया था, और एक बार प्रवेश करने के बाद उन्होने यह सुनिश्चित किया कि संघ और वह सफल हो। वे कठोर उपदेशों से विचलित होने वाली नही थी क्योकि उनका उद्देश्य स्वयं और दूसरों के लिए संसार के बंधनों और पुर्नजन्म से मुक्ति पाना था। जीवन के महत्व को अपने आप में एक लक्ष्य मानते हुए महिलाओं में स्वतन्त्रता की भावना जागृत हुई जिसने घरेलू और सांसारिक विषयों में स्वयं को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया। महिलाओं को पुरुषों के बराबर दर्जा देना बौद्ध धर्म द्वारा महिलाओं के लिए किये गये योगदान को दर्शाता है। थेरीगाथाएं स्त्रियों के मन के भीतर के आत्म उदगार हैं। डा0 भरत सिंह उपाध्याय के अनुसार बौद्ध भिक्षुणियों ने अत्यन्त संगीतात्मक भाषा में आत्मअभिव्यंजनात्मक गीतिकाव्य की शैली के आधार पर अपने जीवन अनुभवों को व्यक्त करते हुए अपने जीवन काव्य को गाया है।[28]

इस प्रकार थेरीगाथा का अध्ययन करने से यह ज्ञात होता है कि तत्कालीन समाज में विभिन्न वर्गों की अनेक स्त्रियाँ अध्ययन में गहरी रूचि रखती थी और बौद्ध ग्रन्थों का सम्यक अनुशीलन कर उनमें पारंगत हुआ करती थी। थेरीगाथा में अनुपमा, सुक्का, सुन्दरीनन्दा, अनुपमा, रोहिणी, सुमेधा, शुभा, आम्बपाली आदि अनेक भिक्षुणियों उदगार संकलित हैं जिनमें अनेक वर्गों एवं वर्णों की महिलाए शामिल हैं।[29] थेरीगाथा में खेमा, सुमना, शैला, सुमेधा, कोसल, मगध और आलवी के राजवंशों की महिलाएं थी। महाप्रजापति गौतमी, तिष्या, अभिरूपा, नन्दा, सुन्दरी, भद्रा शाक्य और लिच्छवि वंश की कन्याए थी। इसी तरह मुक्ता, सकुला, चन्दा, सोमा ब्राहमण वंश से थी। गृहपति और वैश्य वर्ण की महिलाओं में पूर्णा, चित्रा, श्यामा, शुक्ला, उर्वशी, धम्मदिन्ना, उत्तमा, भद्रा, कुन्डलकेशा, पटाचारा, सुजाता और अनुपमा के नाम लिये जा सकते हैं। अढ़ाकासी और अभयमाता, विमला और आम्बपाली गणिकाएं है। शुभा सुनार की पुत्री है और पुर्णिका दासी की। थेरीगाथा के सन्दर्भ में श्रीमति रीज डेविड्स की मान्यता है कि इन गाथाओं में वास्तविक जीवन के चित्र अधिक उभरे हैए साथ ही इनमें तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों का चित्रण भी अधिक हुआ है। इन थेरीगाथाओं की रचयिता प्रायः समाज के सभी वर्गो से सम्बन्धित थी, इस कारण उनके कथन में उनकी यर्थात स्थिति का चित्रण सहजता से हुआ है। विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों के कारण उनका बौद्ध धर्म की सहजता के कारण झुकाव स्वाभाविक था। थेरीगाथाओं में भिक्षुणियों ने मुक्त भाव से अपने मन के विद्रोह को व्यक्त किया है।[30] ज्ञात होता है कि सामाजिक व्यवस्था के उत्पीड़न के कारण एवं वैधव्य निराशा, पति या पुत्र का व्यवहार, खेद, अपमान, दुराचार आदि घटनाओं ने भी अनेक स्त्रियों को बौद्ध धर्म की ओर प्रेरित किया। बौद्ध भिक्षुणियों में अभयमाता, विमला तथा आम्बपाली भिक्षुणी बनने से पूर्व वैभव सम्पन्न गणिकाएं थी पर सामाजिक वितृष्णा के कारण इन्होनें प्रव्रज्या ग्रहण की। इनकी गाथाओं में इनकी सत्यवादिता की झलक दिखाई गई है। चापा, मुक्ता, पूर्णिका,

Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 02, Issue: 01, March, 2026
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

सुमंगलमाता आदि स्थिविर भिक्षुणियाँ दरिद्र परिवारों से सम्बन्धित थी। समाज के उच्च वर्ग की अवहेलना व प्रताड़ना ने उन्हे तोड़ रखा था पर बौद्ध दीक्षा ने उन्हे जीवन जीना सिखाया। बौद्ध धर्म के द्वारा इन थेरियों को भव.बन्धनों से मुक्त होकर उन्हे एक आनन्द की अनुभूति का अनुभव हुआ जिसकी प्रस्तुति उनकी गाथाओं में हुई है। नैतिक सच्चाई भावनाओं की गहनता और सबसे बढ़कर एक अपराजित वैयक्तिक ध्वनि इन गीतों की मुख्य विशेषताएं है। सामाजिक व्यवस्था ने इस काल में आकर नारी होना ही दुख है का भाव बहुत गहरा गया था पर बौद्ध दीक्षा से उन्हे जो ज्ञान के उल्लासमय रूप की प्राप्ति होती थी उसका वर्णन इन थेरी गाथाओं में मिलता है। पुरुष प्रधान समाज स्त्री को हेय दृष्टि से देखता है इस पीड़ा को सहती नारी जब बौद्ध संघ में आकर जब समता का अधिकार पाती है तो उसे अपनी वास्तविकता का परिचय मिलता है। थेरी गाथाओं में अनुभूति और लयात्मकता का समन्वय दिखाई देता है। थेरीगाथा की स्त्रियां पितृसत्तात्मक सोच से संघर्ष करते हुए बौद्ध संघ और धर्म में अपने लिए प्रतिष्ठित एवं सम्मानित स्थान पाने में सफल हो सकी। बौद्ध सिद्धान्तों से प्रभावित होकर राजपरिवार, श्रेष्ठ, अभिजात वर्ग के साथ ही सामान्य परिवार की विवाहित.अविवाहित एवं निम्नवर्ण की नारियाँ यहाँ तक कि वैश्याएँ भी सांसारिक जीवन से मुक्ति पाने हेतु बौद्ध संघ में शामिल हुई। किन्तु ध्यान देने योग्य बात यह भी है कि इन स्त्रियों का जीवन बुद्ध की शरण में आने से पूर्व सुखमय नही था। तत्कालीन समाज मे व्याप्त अनेक कुरीतियों, अन्धविश्वासों का वे शिकार थी। बुद्ध द्वारा स्त्रियों को संघ में प्रवेश दिये जाने की अनुमति के कारण स्त्रियाँ स्वतन्त्रता एवं सम्मान की पात्र बनी एवं उन्हे बौद्ध परम्परा में भिक्षुणी बनने का अधिकार प्राप्त हुआ। यद्यपि उनके कार्य घरेलू, सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र तक ही सीमित रहे थे तथापि बौद्ध धर्म के उद्भव एवं विकास ने स्त्रियों की सामाजिक स्थिति एवं उनके जीवन की परिस्थितियों को कुछ हद तक प्रभावित किया। समाज में सामान्यतः हीन स्थिति के अधिकारी निम्न वर्ण को भी धम्म में प्रवेश का अधिकार देकर बौद्ध धर्म ने चारों वर्णों के प्रति समतावादी दृष्टिकोण का परिचय दिया। संघ में उनका प्रवेश पाना ही नारी जाति के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण उपलब्धि थी जिसने वैदिक धर्म की भेदभावपूर्ण व्यवस्था को चुनौती दी। संघ के उल्लासमय वातावरण ने तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था से पीड़ित स्त्रियों के जीवन में एक नई जान डाल दी। उत्थान की इस प्रक्रिया के समानान्तर ही युगों से चले आ रहे सामाजिक प्रतिबन्ध स्त्रियों की स्थिति में किसी प्रभावी परिवर्तन की प्रक्रिया को बाधित करते रहे। यद्यपि बौद्ध धर्म में स्त्रियों के अनुभव की प्रधानता रही है संघ में प्रवेश लेने एवं सम्मानजनक स्थिति बनाये रखने के लिए उन्हे सदैव संघर्षरत रहना पड़ा। फिर भी महात्मा बुद्ध द्वारा महिलाओं एवं पुरूषों दोनों के लिए संघ के द्वार खोलना तत्कालीन समाज के लिये असाधारण बात थी। बुद्ध एवं आनन्द द्वारा उठाये गये ऐसे कदम महिलाओं के सदगुणों एवं आध्यात्मिक सम्भावना को पहचानने की ओर किये गये प्रयासों को प्रतिबिम्बित करते हैं जिसके द्वारा विभिन्न वर्गों की स्त्रियाँ पितृसत्तात्मक सोच से संघर्ष करते हुए बौद्ध धर्म एवं संघ में अपने लिए प्रतिष्ठित एवं सम्मानित स्थान पाने में सफल हो सकी।

सन्दर्भ.सूची

1. वत्स, एस एवं मुदगल शकुन्तला, वूमेन एण्ड सोसायटी इन एंश्येन्ट इंडिया, ओम पब्लिकेशन, फरीदाबाद, 1999, पृ0.185।
2. बासु एन0 के, एवं सिन्हा, एस0 एन, वूमेन इन एन्श्येन्ट इंडिया, खामा पब्लिशर्स, दिल्ली, 2002, पृ0.160.178 ।
3. चुल्लवग्गपालि, विनयपिटक, भिक्षुणीस्कन्धक, संपा0एवंअनु0,.स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, बौद्ध भारती प्रकाशन, वाराणसी 2008, पृ0.571-577
4. तदैव
5. तदैव
6. तदैव
7. तदैव
8. तदैव
9. तदैव

Janak: A Journal of Humanities
"An International, Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal"
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 02, Issue: 01, March, 2026
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

10. तदैव
11. तदैव
12. अल्टेकर, ए0,एस0, दि पोजीशन आव वुमेन इन हिन्दु सिविलाइजेशन, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, 1959, पृ0.209
13. संयुक्तनिकायपालि, 4/91/10 दीघनिकायपालि, 2/3, प्रताप, अरुण सिंह, जैन एवं बौद्ध भिक्षुणी संघ, पाश्र्वनाथ विद्याश्रम शोधसंस्थान, वाराणसी, 1986, पृ0.124
14. मज्झिमनिकाय पालि, 2/73, वही, पृ0.124
15. बुद्धिस्ट्स रिर्काड्स आफ द वेस्टर्न वल्ड, वाल्यूम.1 पृ0 32 , वाल्यूम.3 पृ0 309
16. अंगुत्तरनिकायपालि, 1/14, भाग.3, ;संपा0 एवं अनु0 स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, बौद्ध भारती प्रकाशन, वाराणसी, 2002, पृ0.257 विनयधरानं यदिदं पटाचारा।
17. मज्झिमनिकाय पालि, 44/1, संपा0 एवं अनु0 स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, बौद्ध भारती प्रकाशन, वाराणसी, 1998, पृ0.14
18. थेरीगाथापालि, गाथा संख्या.70-71, संपा0एवंअनु0 स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, बौद्ध भारती प्रकाशन, वाराणसी, 2003।
19. संयुक्तनिकायपालि, 44/1
20. मज्झिमनिकाय पालि, 1/44, ;संपा0एवंअनु0द्ध स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, बौद्ध भारती प्रकाशन, वाराणसी, 2002
21. थेरीगाथा, गाथा संख्या.427
22. थेरीगाथा, गाथासंख्या.49,53,58,59,6,61, सीलवती चित्तकथिका बहुसुत्ता बुद्धसासने विनीता।
23. थेरीगाथा, गाथा संख्या.449
24. एपिग्राफिया इंडिका, भाग.10, लिस्ट आफ ब्राह्मी इंस्क्रिप्सन्श, नं.38, आर्कियोलोजिकल सर्वे आफ इंडिया, जनपथ, नई दिल्ली, 1984, पृ0 संख्या.184
25. पूर्वोक्त, लिस्ट आफ ब्राह्मी इंस्क्रिप्सन्श, नं.38, 925 पृ0 संख्या.183
26. पूर्वोक्त, लिस्ट आफ ब्राह्मी इंस्क्रिप्सन्श, नं.319, 352 पृ0 संख्या.224
27. पूर्वोक्त, लिस्ट आफ ब्राह्मी इंस्क्रिप्सन्श, नं.1240, पृ0 संख्या.224
28. उपाध्याय, भरत सिंह, थेरीगाथा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 2013, पृ0.40
29. थेरीगाथा, गाथा संख्या.49, 53, 58, 59, 60, 61
30. डेविड्स, रीज, पाल्मस आफ द अर्ली बुद्धिस्ट्स, पालि टेक्स्ट सोसाइटी, आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, लन्दन, 1909, पृ0 34